||जय सियाराम जी||

श्री हनुमान चालीसा

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोग हराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा ।

श्री हनुमान चालीसा

श्री हनुमान चालीसा जी का चालीसा [40] चोपाईयों का हिंदी-अर्थ सहित

तस्मै श्री गुरूवे नमः

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव |
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ||

श्री हनुमान जी कृपा से श्रीमान रवि प्रकाश जी सैन [एक्स-आर्मी] की ओर से सप्रेम भेंट

-: निवेदन :-

हनुमान चालीसा जी का अमोघ महिमा का ज्ञान कराने के लिए एवं सरल हिन्दी अर्थ सहित प्रकाशित किया गया है | इनमें आपको हनुमान चालीसा जी का प्रत्येक चौपाईयो का सरल भाषा में अर्थ भी दिया गया है एवं इनमेँ श्रीमतभागवतगीता जी को सहायक के रूप में लिया गया है ||

|| कोई त्रुटि हो तो क्षमा करे ||

|| धन्यवाद ||

-: पुनः निवेदन :-

श्रीमन एवं श्रीमति जी यह [श्री हनुमान चालीसा जी] प्रेम व ह्रदय से लिखी गयी है वेसे तो हम कोई इनके लेखक नहीं है क्योंकि इन्हे पहले ही हमारे सनातन धर्म के श्री गोस्वामी तुलसीदास जी द्‌वारा लिख दी गयी है आशा है की आप इस बात को आप समझेंगे | ओर आप से हाथ जोड कर निवेदन है, आप सभी पर्यावरण को शुद्‌ध करे व बनाये रखे पेड़-पोधे लगाये ओर किसी के साथ भेदभाव न करे मन को साफ रखिये ओर भगवन को स्मरण करते चलिए

|| धन्यवाद ||

श्रीहनुमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

|| दोहा ||

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारी |
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारी ||
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन - कुमार |
बल बुद्धि बिद्या देहु मोही हरहु कलेस बिकार ||

अर्थ:- हे श्री गुरुवर, श्री सियारामजी के सबसे प्रिय हम आपके चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुनंदन,रघुवीर,रामरज के निर्मल यश का वर्णन करता हू जो मुकुटयुक्त, गदा युक्त चक्रयुक्त प्रकाशमान तेज का पुंज ओर सूर्य के सदृश ज्योतियुक्त देखने में अति गहन ओर चार फल [दया धर्म अर्थ काम ओर मोक्ष] को देने वाले है | हे अंजनी पुत्र ,पवन कुमार ,केसरीनंदन ! हम आपको आपको सुमिरन करते है आप तो जानते ही है की हमारा शरीर ओर बुद्धि निर्बल है | आप हमे शरारिक बल, सदबुद्धि एवम् ज्ञान दीजिए ओर हमारे दुखों व दोषों को समाप्त कर दीजिए |

||चौपाई||

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर | जय कपीस तिहूँलोक उजागर ||

अर्थ :- हे श्री हनुमान जी,अंजनी नंदन,केसरी नंदन आप की जय हो | आपका ज्ञान ओर गुण सागरो, महासागरों से भी अधिक गहरा है| हे कपीश्वर ,पवनपुत्र आपकी जय हो! आप तीनों लोको [भूलोक, स्वर्गलोक,ओर पाताल लोक] में कीर्ति रखते है |

राम दूत अतुलित बल धामा | अंजनी पुत्र पवनसुत नामा ||

अर्थ :- हे पवनसुत अंजनीनंदन आपकी जय हो आपके समान दूसरा बलवान नहीं है |

महावीर बिक्रम बजरंगी | कुमति निवार सुमति के संगी ||

अर्थ :- हे महावीर बजरंग बली आपकी जय हो ! आप विशेष पराक्रम वाले है | आप दुर्बुद्धि को सद् बुद्धि देते है एवम् आप अच्छि बुद्धि वालों के साथी एवं सहायक / मार्गदर्शक है |

कंचन बरन बिराज सुबेसा | कानन कुण्डल कुंचित केसा ||

अर्थ :- आपके सुनहरे रंग, आपके सुन्दर वस्त्र, आपके कानों में कुण्डल एवं आप घुमावदार घुँघराले बालों में सुशोभित है |

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै | काँधे मूँज जनेऊ साजै ||

अर्थ :- आपके एक हाथ में वज्र के समान कठोर गदा है ओर दूसरे हाथ में सनातन धर्म की ध्वजा है | ओर आपके कंधे पर जड़ से बहुत पतली मूँज की जनेऊ सुशोभित है |

शंकर सुवन केसरी नंदन | तेज प्रताप महा जग बंदन ||

अर्थ :- हे केसरीनंदन आप शंकर भग़वान जी के नौवे अवतार है | आपकी जय हो ! आपके पराक्रम से एवम् आपके महान यश से पूरे ब्रम्हांड में वंदना होती है

विद्यावान गुनी अति चातुर | राम काज करिबे को आतुर ||

अर्थ :- आप विद्या में बहुत अधिक चतुर एवम् उनका संग्रहण है | आपकी जय हो ! ओर अत्यंत कर्म कुशल होकर श्री रामजी के कार्य करने के लिए सदेव तत्पर रहते है |

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया | राम लखन सीता मन बसिया ||

अर्थ :- आप प्रभु श्री रामजी के चरित्र को सुनने में व जपने में आनंदित रहते है | सियारामजी व रामजी के भ्राता लक्ष्मण जी आपके ह्रदय में बसे हुए है आपकी जय हो !

सूक्ष्म रूप धरि सियहीं दिखावा | बिकट रूप धरि लंक जरावा ||

अर्थ :- आप अष्ट सिद्धियों में निपुण है आपकी जय हो ! आप अपना छोटा रूप धारण करके सीता माता जी को दिखलाया ओर आपने एक मात्र पूँछ से ही लंका का दहन किया आपकी जय हो !

भीम रूप धरि असुर सँहारे | रामचन्द्र जी के काज सँवारे ||

अर्थ :- आपने अपना अति विशाल एवं विक्राल रूप धारण करके राक्षसों का संहार किया | एवं आपने श्री रामचंद्रजी के उदेशयों को पूर्ण करने के लिए श्री राम जी के सहायक बने | आपकी जय हो !

लाय संजीवन लखन जियाये | श्री रघुबीर हरषि उर लाये ||

अर्थ :- हे हनुमान जी आपने कम समय में द्रोणागिरी पर्वत से संजीवनी बूटी लाकर आपने लक्ष्मण जी को जीवित किया जिससे श्री रघुवीर जी हर्षित होकर आपको ह्रदय से लगा लिया | आपकी जय हो !

रघुपति किन्ही बहुत बड़ाई | तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ||

अर्थ :- श्री रामचन्द्र जी ने हनुमान जी की प्रशंसा करते हुए कहे की आप मेरे भाई भरत के समरूप प्यारे हो |

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं | अस कहि श्रीपति कंठ लगावे ||

अर्थ :- श्री रामचंद्रजी ने हनुमान जी को यह कहकर गले से लगा लिया की आपके यश का गान हजार मुख वाले शेषनाग भी करे |

सनकादिक ब्रम्हादि मुनिसा | नारद सारद सहित अहिसा ||

अर्थ :- ब्रम्हा जी के चार मानस पुत्र श्री सनक जी , श्री सनातन जी , श्री सनन्दं जी , श्री सनत्कुमार जी आदि मुनि ब्रम्हा व अन्य देवतागण सरस्वती जी ,नारद जी शेषनाग जी सब आपका गुण गान करते है |

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते | कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ||

अर्थ :- हे हनुमान जी आपकी जय हो ! आपके यश को यमराज जी कुबेर जी आदि सब दिशाओ के रक्षक , कवि , विद्‌वान या कोई भी पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते है |

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा | राम मिलाय राज पद दीन्हा ||

अर्थ :- हे हनुमान जी आपकी जय हो ! आपने सुग्रीव जी को श्री रामजी से मिलवाकर उपकार किया जिससे उन्हे न्याय मिल पाया | जिसके कारण वह किष्किन्धा के नये राज्य बने

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना | लंकेस्वर भए सब जग जाना ||

अर्थ :- श्री रामजी की दया से, आपके उपदेश का बिभीषण जी ने पालन किया व जिससे धर्म की जीत हुई एवं बिभीषण जी लंका के नये राज्य बने, इस बात को सारा संसार जानता है

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू | लील्यो ताहि मधुर फल जानू ||

अर्थ :- सूर्य जी इतने योजन दुरी पर है लगभग पृथ्वी से 12467 युग दुरी पर स्थित है , जिनको आपने अपने बाल्य काल में ही एक मीठा फल समझकर निंगल लिया |

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं | जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ||

अर्थ :- आपने श्री रामचंद्र जी की दी गयी अँगूठी को मुँह में रखकर , दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाकर एक छलांग में बहुत दुरी व गहरे महासागर को लांघ लिया इसमें कोई संदेह नहीं है | आपकी जय हो !

दुर्गम काज जगत के जेते | सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ||

अर्थ :- संसार में कोई भी कठिन से कठिन कार्य आपकी कृपा से सहज हो जाते है एवं नाम मात्र से ही आसान हो जाते है ॥ आपकी जय हो !

राम दुआरे तुम रखवारे | होत न आज्ञा बिनु पैसारे ||

अर्थ :- हे हनुमान जी आपके कृपा के बिना श्रीराम जी दर्शन असंभव है | क्योंकि आप ही श्री रामचंद्र जी के द्वार के रखवाले है आपकी आज्ञा के बिना द्वार के सामने स्थल पर भी जाना असंभव | आपकी जय हो !

सब सुख लहै तुम्हारी सरना | तुम रक्षक काहू को डर ना ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, जो भी आपकी शरण में आते है | उन्हे आप सब सुख एवम् आप जैसा भक्ति आनंद प्रदान करते है | एवं जिनके ऊपर आपकी कृपा है जिनके प्राणों की रक्षा आप करते है उनको संसार में कोई पराजित नहीं कर सकता | आपकी जय हो !

आपन तेज सम्हारो आपै | तीनों लोक हाँक ते काँपे ||

अर्थ :- हे हनुमान जी आपके आत्म नियंत्रण में हम निशब्द है आपके वेग से ही पता चलता है आपके सिवाय उनको रोकना असंभव | एवम् आपकी गर्जना से तीनों लोक काँप उठते है | आपकी जय हो !

भूत पिसाच निकट नहिं आवै | महाबीर जब नाम सुनावै ||

अर्थ :- जहाँ भी, कही भी, किसी भी स्थान पर भी हमारे महावीर हनुमान जी का नाम सुनाया जाता है वहाँ भूत पिसाच तो बहुत दुर की बात है | वह निकट भी नहीं आते है |

नासै रोग हरै सब पीरा | जपत निरंतर हनुमत बीरा ||

अर्थ :- हे महावीर हनुमान जी आपको निरंतर स्मरण करने से व जपने से शरीर रोग मुक्त एवम् पीड़ा से मुक्त हो जाता है | आपकी जय हो !

संकट तें हनुमान छुडावै | मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, जो भी तन को मन को वाणी को व काया को एकाग्र करके आपकी भक्ति में रहते है उनके सभी संकटों को आप दुर करते है अर्थात आप छुडाते है | आपकी जय हो !

सब पर राम तपस्वी राजा | तिन के काज सकल तुम साजा ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, आप भगवान शिवजी अंश है वह इस ब्रह्मांड के सबसे बड़े तपस्वी है | वह भी राजा श्री रामचंद्र जी नाम को स्मरण करते है | व आप श्री रामजी के कार्य को सरलता से आप पूर्ण कर देते है | आपकी जय हो !

और मनोरथ जो कोइ लावै | सोइ अमित जीवन फल पावै ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, जो भी आप से कुछ भी अच्छे सच्चे मन से व हृदय से मांगते है आप उनको जीवन में पूरे फल प्रदान करते है | आपकी जय हो !

चारों जुग प्रताप तुम्हारा | है परसिद्ध जगत उजियारा ||

अर्थ :- है महावीर हनमान जी, आपका यश चारों युगो [सत्ययुग, त्रेतायुग,द्वापरयुग व कलियुग] में आपका प्रताप फेला हुआ है, व जिस प्रकार भगवा पूरे विश्व को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते है, उसी प्रकार ब्रम्हांड में आपकी कीर्ति प्रकाशमान है | आपकी जय हो !

साधु संत के तुम रखवारे | असुर निकंदन राम दुलारे ||

अर्थ :- हे श्रीराम जी प्रिय महावीर हनुमान जी, आप असुरों के संहारकर्ता है | एवम् साधुओ, संतों, सन्यासियों के प्राणों की रक्षा आप करते है |

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता | अस बर दीन जानकी माता ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, जिस प्रकार आपने सूर्य देव जी से चलायमान रथ के समक्ष आपने शास्त्रों का ज्ञान लिया | उसी प्रकार आपको माता जानकी जी ने अष्ट सिद्धियों व नौ निधियों को वरदान स्वरूप दिया उसी प्रकार आप सिद्धियाँ व निधियाँ का प्रदान करते है | आपकी जय हो !

राम रसायन तुम्हरे पासा | सदा रहो रघुपति के दासा ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, आप श्री रघुपति जी की शरण में सदेव रहते है एवम् भक्ति करना कोई आपसे सीखे, व जिनके ऊपर आपकी कृपा रहती है उन्हे भी आप भक्ति प्रेम भाव सिखाते है | आपकी जय हो !

तुम्हरे भजन राम को पावै | जन्म जन्म के दुख बिसरवै ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, आप को जपने से आपको भजने से श्री राम जी की भक्ति प्राप्त होती है एवम् आप जन्म जन्मांतर के दुख दुर कर देते है | आपकी जय हो !

अंत काल रघुबर पुर जाई | जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, हम फिर भी जन्म लेते है तो श्री राम भक्ति में लीन व राम भक्त कहलाएंगे एवम् आपकी इन चौपाई का कोई भी पाठ करते है उन्हे नर्क में भी यातनाओ से राहत मिलेगी | आपकी जय हो !

और देवता चित्त न धरई | हनुमत सेई सर्ब सुख करई ||

अर्थ :- हे हनुमान जी जिनके अपर आपकी दया दृष्टि है व जिनके मन में आप रहते है उनको आपकी सेवा पूजा व पाठ करने से सब सुख मिल जाते है | आपकी जय हो !

संकट कटै मिटै सब पीरा | जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ||

अर्थ :- हे महावीर हनुमान जी जो भी आपको स्मरण व आपको सुमिरन [आत्मा(मन) के साथ स्मरण] करते है उनके सभी दुख व पीड़ा कट जाते है मिट जाते है |

जै जै जै हनुमान गोसाईं | कृपा करहु गुरु देव की नाईं ||

अर्थ :- हे महावीर स्वामी हनुमान जी, आपकी जय हो ! आपकी जय हो ! हम पर आप कृपालु गुरुदेव जी के समान कृपा करे | आपकी जय हो !

जो सत बार पाठ कर कोई | छूटहि बंदि महा सुख होई ||

अर्थ :- है महावीर स्वामी हनुमान जी, जो कोई भी आपके सच्चे मन से हनुमान चलिसा जी के सौ बार पाठ करेंगे वह बंधनों से मुक्त हो जाएंगे और उन्हे सच्चिदानन्दघन परमानन्द पराकाष्ठा वाली शांति को प्राप्त होते है |

जो यह पढै हनुमान चालीसा | होय सिद्धि साखी गौरीसा ||

अर्थ :- हे हनुमान जी, जो भी आप के सच्चे व अच्छे मन से पाठ करेंगे आप उनकी सभी मनोकामना पूर्ण करेंगे तथा आप भगवान शिवजी क अंश है | इसलिए जो भी हनुमान चालीसा जी के पाठ करेंगे उन्हे आप सिद्धीया प्रदान करेंगे | आपकी जय हो !

तुलसीदास सदा हरि चेरा | कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ||

अर्थ :- हे गोस्वामी तुलसीदास जी आपको कोटी कोटी नमन, आप सदा श्री रामचंद्र जी के भक्त रहे है एवम् आपका कहना है, हे हनुमान जी आप भी श्री रामजी क तरह हमारे हृदय में आकर बस जाए | आपकी जय हो !

|| दोहा ||

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप |

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ||

अर्थ :- हे संकट हरने वाले महावीर पवनपुत्र हनुमान जी जिस प्रकार आपके हृदय में सियाराम जी, लक्ष्मण जी उपस्थित है उसी प्रकार आप सियाराम जी, लक्ष्मण जी हमारे हृदय में बस जाए |

|| जय जय सियारामजी की जय ||

|| जय बजरंग बली ||

|| श्री राम जय राम जय जय राम सियाराम जी को जय सियाराम ||

|| श्रीराम-स्तुति ||

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारूणं |
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं ||

कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरम |
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ||

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं |
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ||

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणं |
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ||

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं |
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ||

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो |
करूना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ||

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली |
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ||

|| सोरठा ||

जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि |
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ||

|| संकटमोचन हनुमानाष्टक ||

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहूँ लोक भयो अँधियारो |

ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ||

देवन आनि करी बिनती तब, छाँडि दियो रबि कष्ट निवारो |

को नहिं जानत है जगमें कपि, संकट मोचन नाम तिहारो || १ ||

बालि की त्रास कपीस बसै गिरी, जात महाप्रभु पंथ निहारो |

चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ||

कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो | को०-२||

अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो |

जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ||

हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया-सुधि प्राण उबारो | को०-३||

रावण त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो |

ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ||

चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो | को०-४||

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावण मारो |

लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ||

आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो | को०-५||

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग की फाँस सबै सिर डारो |
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ||
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो | को०-६||

बन्धु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो |
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ||
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो | को०-७||

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो |
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहिं जात है टारो ||
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो | को०-८||

|| दोहा ||

लाल देह लाली लसे, अरु धरी लाल लँगूर |
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ||

|| जय जय सियाराम ||

|| बजरंग बाण ||

|| दोहा ||

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान |

तेहि के कारज सकल सुभ , सिद्ध करै हनुमान ||

जय हनुमंत संत-हितकारी | सुनि लीजै प्रभु बिनय हमारी ||

जन के काज बिलंब न कीजै | आतुर दौरि महासुख दीजै ||

जैसे कूदि सिंधु के पारा | सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ||

आगे जाय लंकिनी रोका | मारेहु लत गई सुरलोका ||

जाय बिभीषन को सुख दीन्हा | सीता निरखि परम-पद लिन्हा ||

बाग उजारी सिंधु महँ बोरा | अति आतुर जमकातर तोरा ||

अछय कुमार मारि संहारा | लूम लपेटि लंक को जारा ||

लाह समान लंक जरि गई | जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ||

अब बिलंब केहि कारन स्वामी | कृपा करहु उर अंतरजामी ||

जय जय लखन प्राण के दाता | आतुर है दुख करहु निपाता ||

जय हनुमान जयति बल-सागर | सुर-समूह-समरथ भट-नागर ||

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीलै | बैरिहि मारू वज्र की कीलै ||

ॐ हीं हीं हीं हनुमंत कपीसा | ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा ||

जय अंजनी कुम्हार बलवंता | संकरसुवन बीर हनुमंता ||

बदन कराल काल-कुल-घालक | राम-सहाय सदा प्रतिपालक ||

भूत, प्रेत, पिसाच, निसाचर | अगनि बेताल काल मारी मर ||

इन्हे मारू, तोहि सपथ राम की | राखु नाथ मरजाद नाम की ||

सत्य होहु हरि सपथ पाई कै | रामदूत धरू मारू धाइ कै ||

जय जय जय हनुमंत अगाधा | दुख पावत जन केहि अपराधा ||

पूजा जप तप नेम अचारा | नहि जानत कछु दास तुम्हारा ||

बन उपबन मग गिरी गृह माहीं | तुम्हरे बल हो डरपत नाहीं ||

जनकसुता-हरि-दास कहावौ | ता की सपथ, बिलंब न लावौ ||

जय-जय-जय-धुनि होत अकासा | सुमिरत होय दुसह दुख नासा ||

चरन पकरि कर जोरि मनावौं | यहि औसर अब केहि गोहरावौं ||

उठ उठ चलु तोहि राम-दोहाई | पायँ परौ, कर जोरि मनाई ||

ॐ चम चम चम चम चपल चलंता | ॐ हनु हनु हनु हनु हनु-हनुमंता ||

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल | ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल ||

अपने जन को तुरत उबारौ | सुमिरत होय अनंद हमारौ ||

यह बजरंग-बाण जेहि मारै | ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ||

पाठ करै बजरंग बाण की | हनुमत रच्छा करै प्रान की ||

यह बजरंग-बाण जो जापै | तासों भूत-प्रेत सब काँपे ||

धूप देय जो जपै हमेसा | ता के तन नहिं रहै कलैसा ||

|| दोहा ||

उर प्रतीति दृढ़, सरन है, पाठ करै धरि ध्यान |

बाधा सब हर, करै सब काम सिद्‍ध सफल हनुमान ||

निवेदन :- अपने स्वार्थ के लिये बजरंग बाण जी के पाठ न करे अच्छे व सच्चे मन से सुमिरन करे ||धन्यवाद||

|| श्री महावीर हनुमानजी की आरती ||

आरती कीजै हनुमान लला की | दुष्टदलन रघुनाथ कला की || टेक ||

जाके बल से गिरिवर काँपे | रोग-दोष जाके निकट न झाँपै || १ ||

अंजनी पुत्र महा बलदाई | संतन के प्रभु सदा सहाई || २ ||

दे बीरा रघुनाथ पठाये | लंका जारी सीय सुधि लाये || ३ ||

लंका सो कोट समुद्र सी खाई | जात पवनसुत बार न लाई || ४ ||

लंका जारि असुर संहारे | सियाराम जी के काज सँवारे || ५ ||

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे | आनि सजीवन प्रान उबारे || ६ ||

पैठि पताल तोरि जम-कारे | अहिरावन की भुजा उखारे || ७ ||

बायें भुजा असुर दल मारे | दाहिने भुजा संतजन तारे || ८ ||

सुर नर मुनि जन आरती उतारे | जै जै जै हनुमान उचारे || ९ ||

कंचन थार कपूर लौ छाई | आरती करत अंजना माई || १० ||

जो हनुमान जी की आरती गावै | बसि बैकुंठ परमपद पावै || ११ ||

लंक विध्वंश किए रघुराई | तुलसीदास जी प्रभु कीर्ति गाई || १२ ||

|| जय सियाराम जी ||

|| हनुमान जी के नाम मंत्र ||

- ॐ भगवते रामभक्ताय नमो नमः |
- ॐ भगवते हनुमते नमो नमः |
- ॐ भगवते शिवाय नमो नमः |
- ॐ भगवते वायु पुत्राय नमो नमः |
- ॐ भगवते अंजनी सूताय नमो नमः |
- ॐ श्री रामाय नमो नमः |
- ॐ श्री दशबाहवे नमो नमः |
- ॐ श्री कल्याणाय नमो नमः |
- ॐ श्री ओंकार जन्माय नमो नमः |
- ॐ श्री रामदूताय नमो नमः |
- ॐ श्री देवाय नमो नमः |
- ॐ श्री योगिने नमो नमः |
- ॐ श्री शान्ताय नमो नमः |
- ॐ श्री युवाय नमो नमः |
- ॐ श्री बालाय नमो नमः |

- ॐ श्री सत्याय नमो नमः |
- ॐ श्री लक्ष्मण प्राणदाताय नमो नमः |
- ॐ श्री भगवते नमो नमः |
- ॐ श्री अनादाय नमो नमः |
- ॐ श्री हरिश्वराय नमो नमः |
- ॐ श्री विश्व गम्याय नमो नमः |

निवेदन :- आप सभी से हाथ जोड़कर विनती है |

आप सभी सही से सुमिरन व उच्चारण करे व हनुमान जी के विश्व में अनेकों मंदिर है सब जगह अलग-अलग नाम से हमारे महावीर हनुमान जी के मंदिर व पूजा स्थल है | जिससे हमारे हनुमान जी के अनेकों नाम है || धन्यवाद ||

|| जय सियाराम जी की जय ||

हमारे सर्वसम्पन्न भारत देश में श्री राम जी के पूजास्थल

1. श्री अयोध्या राम मंदिर, उत्तर प्रदेश :- हमारे भारत के प्रधानमंत्री जी श्रीमान नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी के कार्यकाल में बनवाया गया |
2. श्री राम राजा मंदिर, ओरछा [मध्य प्रदेश]
3. श्री सीता रामचंद्र स्वामी मंदिर भद्रादी कोठागुडेम, भद्राचलम [तेलंगाना] :- हमारे रामायण काल से जुड़े हुए, दक्षिण अयोध्या मंदिर
4. श्री रामा स्वामी मंदिर, [कुम्भ कोणम] तमिलनाडु
5. श्री कालाराम जी मंदिर नासिक, [महाराष्ट्र]
6. श्री त्रिपायर जी राम मंदिर त्रिशुर [केरल]
7. श्री राम मंदिर, भुवनेश्वर , खारवेल नगर के पास [ओडिशा]
8. श्री कोड़ंडाराम मंदिर, हिरेमांगलूर में स्थित [कर्नाटक]
9. श्री राम तीर्थ मंदिर, चोगावन रोड पर स्थित [अमृतस्वर]
10. श्री रघुनाथ जी मंदिर, उत्तर भारत [जम्मू]

|| जय सियाराम जी ||

|| जय श्री राम ||

|| जय सीताराम जी ||

|| धन्यवाद ||